जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१
संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५५ वे ❖ अंक ८ वा ❖ एप्रिल २०२४ ❖ वीर संवत २५५० ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात	पान नं.		पान नं.
• नई दिशाएँ देनेवाले, महावीर की महिमा गाएँ	२३	• सदा सत्य का आचरण हो	७९
• ज्योति पुरुष महावीर	२७	• नफरत V/S प्यार	८१
• महावीर गाथा, पुणे	३०	• जैन समाज गौरव - श्री. वालचंदजी संचेती	९१
• महावीर प्रभु : अंग्रेजी नामाक्षर के सप्त संदेश	३१	• गांधी गुरुजी प्रतिष्ठान - निबंध स्पर्धा	९४
• कव्हर तपशील	३३	• अरिहन्त : सिध्दान्त और स्वरुप	९५
• श्री क्षत्रियकुंड तीर्थ	४३	• अपशब्द और निंदा : क्रोध के प्रिय मित्र	९९
• क्रान्तिकारी महावीर	४७	• शिक्षण - परिक्षण - प्रशिक्षण	१०१
• वन्दे महावीरम्	४८	• परिस स्पर्श मैत्रीचा	१०३
• मोक्ष मार्ग के २१ कदम : गुणवान	५१	• कडवे प्रवचन	१०५
• विश्व वन्दनीय तीर्थंकर महावीर विविध विचार	६७	• बुध्दिमान ''अभयकुमार''	११५
• नजर अंदाज करना सीखो	७०	• जागृत विचार	११८
• बिन जाने कित जाऊँ, प्रश्नोत्तर प्रवचन	७५	• मंत्राधिराज प्रवचन सार	११९
		• Password - पासवर्ड	१२३
		• मुंबई - जैन धर्मशाला	१२४

- हास्य जागृती १२५
- स्वस्थ जीवन के लिए तनाव मुक्त रहें १२६
- वैराग्य वाणी १२७
- नकल का परिणाम १२८
- श्री. फुलचंदजी बांठिया – पुणे १३९
- दी पूना मर्चन्ट चेंबर, पुणे १४०
- Navkar Mantra १४१
- सुर्यदत्त, सौ. सुषमा चोरडिया, अॅवार्ड १४२
- अरिहंत जागृती मंच – निबंध स्पर्धा १४३
- संचेती ट्रस्ट – पुणे १४४
- महाराष्ट्र विहार ग्रुप, पुणे – संमेलन १४५
- अहिंसेचा मार्ग प्रगतीचा मार्ग १४८
- पत्रकार मिलन म्हेत्रे, पुणे – ३ पुरस्कार १५१
- पंडित श्री. विनोद जैन – पुरस्कार १५१
- मैत्रीचे नाते संबंध १५२
- श्री. सुभाषजी रुणवाल, मुंबई – अॅवार्ड १५५
- श्री शांतीनाथ सेवा संस्थान – वेबसाईट १५६
- साईरिसा कॅन्सर केअर सेंटर, छत्तीसगड १५७
- स्वानंद महिला संस्था, कॉन्फरन्स – संमेलन १५८
- वाचकांचे मनोगत १६०
- पुणे, कोंढवा – कत्तलखाना विरोध १६२
- दुगड ग्रुप व निर्जरा ग्रुप – रक्तदान १६३
- अरिहंत जागृती मंच – पुस्तक प्रकाशन १६५
- गुगळे स्नेह संमेलन – चिचोंडी १६६
- गौतम लब्धी फांऊडेशन महिला विंग १६७
- आर.एम.डी. फाऊंडेशन १६८
- सहेली सेवा संघ, पुणे १६८
- अर्हम् महाविद्यालय, पुणे १६९
- निर्मला छाजेड – अध्यक्षपदी १६९
- घाति कर्म सूं बच १७१
- 19 April – मौन दिन १७५
- सवाल में ही जवाब १७९
- सुरक्षा १८५
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

	एक वर्ष	त्रिवार्षिक	पंचवार्षिक
साध्या पोस्टाने	५००	१३५०	२२००
रजिस्टर पोस्टाने	८००	२२५०	३७००

या अंकाची किंमत ५० रुपये. Google Pay - Mob. : 9822086997

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक - एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

नई दिशाएँ देनेवाले, महावीर की महिमा गाएँ

लेखक : राष्ट्रसंत प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

आज अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म कल्याणक मना रहे हैं। इसी चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को अनुत्तर योगी भगवान महावीर का कुण्डलपुर में महाराज सिद्धार्थ के घर-आँगन में पुण्यवती माता त्रिशला की कुक्षी से जन्म हुआ। भगवान महावीर के जन्म से पूर्व जो स्थितियाँ थीं, वे सचमुच अत्यन्त दयनीय थीं। हिंसा, असत्य, शोषण, जातिवाद, पंथवाद आदि के दुश्चक्रों से हर व्यक्ति आहत था। भगवान महावीर के अवतरण से आहत जन-मानस को पर्याप्त राहत मिली। वे धर्म के दैदिप्यमान दिवाकर के रूप में इस धरा पर उदित हुए। उन्होंने सम्पूर्ण संसार में इस तरह का दिव्य आलोक प्रदान किया कि अज्ञान और अविवेक का जो चतुर्दिक अंधकार परिव्याप्त था, वह समाप्त हो गया। वातावरण में एक नई चेतना का संचार हुआ । महावीर सचमुच महावीर थे। उनकी करूणा अथाह थी। हम उनकी जितनी भी महिमा गाएँ, वह कम है। मैंने भगवान महावीर के सम्बन्ध में एक बार लिखा था-

महावीर ऊँच-नीच का भेद मिटाने आये थे ।
खण्ड मनुज को देखा उसे अखण्ड बनाने आये थे ।
पाषाणों को फिर से तुमने देव बना डाला
वीर प्रभु तो आत्मा में परमात्म जगाने आये थे ।

⁂ संयम – साधना के पथ पर

भगवान महावीर बचपन से ही अद्‌भुत प्रतिभा के धनी थे। वैसे भी तीर्थंकर होने वाली महान आत्मा अपने साथ तीन ज्ञान लेकर आती है। सामान्यतः बचपन में बच्चे अपने समय को यूं ही खेल-कूद में व्यतीत कर देते हैं, पर महावीर का शैशवकाल अत्यन्त रचनात्मक था। वे सतत लोक- मंगल के उदात्त चिन्तन में संलग्न रहते थे। उनके आस-पास विराट वैभव अठखेलियाँ कर रहा था, पर वे कभी भी उसमें आसक्त नहीं बने । अपने माता-पिता, भ्राता आदि परिजनों की संतुष्टि के लिए वे अमुक समय तक संसार में रहे, पर उनका मन वातावरण को सौम्यता प्रदान करने के लिए छटपटाता रहा।

तीस वर्ष की युवावस्था में वे संयम-साधना के अग्निपथ पर चल पड़े। दीक्षित होते ही उन्होंने कठोरतम तपःसाधना से अपने आपको संलग्न कर लिया। उनकी तप-साधना उच्च कोटि की थी। कदम-कदम पर उनके समक्ष अनेक उपसर्ग उपस्थित हुए, पर वे एक पल के लिए भी कभी कंपित एवं विचलित नहीं हुए। उन्होंने सब कुछ समभाव से सहा। लगाव और टकराव उनके मन को छू तक नहीं सके। साढ़े बारह वर्ष तक मौनपूर्वक वे पूर्णतः तप एवं आत्मचिंतन में लीन रहे। जब उन्हें केवल्य का आलोक प्राप्त हो गया तो उन्होंने अपनी दिव्य देशना प्रदान की, जिससे पापों और पाखण्डों के मजबूत किले ध्वस्त होने लगे।

⁂ अद्‌भुत क्रान्ति

जैसा कि मैं प्रारम्भ में कह चुका हूँ, भगवान महावीर के जन्म से पूर्व की जो स्थितियाँ थीं, वे एकदम विषम थीं। भगवान महावीर एक क्रांतद्रष्टा के रूप में अवतरित हुए। कदम-कदम पर हो रहे जीवन मूल्यों के अवमूल्यन से उनका मन उद्वेलित एवं आंदोलित हुए बिना नहीं रह सका। धर्म के नाम पर न केवल पशुओं की, अपितु मनुष्यों की बलि, नारियों का उत्पीड़न, मानव मानव के बीच में भेदभाव की दीवारें, परिग्रही बनकर शोषण, छूआछूत, घृणा, आतंक और न जाने क्या-क्या अकरणीय नहीं हो रहा था, उस युग में।

महावीर करूणा के देवता थे। वे इस निर्ममता और निर्दयता को भला, किस तरह सहन कर सकते थे? प्राणीमात्र की पीड़ा उनकी अपनी पीड़ा थी। उन्होंने स्वयं को कष्टों की आग में झोंककर भी, पीड़ित मानवता को प्रसन्नता प्रदान की।

भगवान महावीर के द्वारा निरूपित अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अनेकांत आदि महत्वपूर्ण सिद्धान्त उपादेय सिद्ध हुए एवं जन चेतना को भ्रम से मुक्त बनने का एक स्वर्णिम अवसर मिला। वे आलौकिक प्रकाश स्तम्भ थे। आत्मकल्याण के साथ वे सर्वकल्याण के दृष्टिकोण के साथ चले। भटकी हुई मानवता को उन्होंने स्पष्ट इंगित दिए। भँवरजाल में फँस जाने को आतुर जगती को दिशा-परिवर्तन की समझ दी। संघर्षपूर्ण लहरोंकी आतुरता से अपने को बचा लेने के लिए आवश्यक बोध दिया। महावीर एक सुलझाव थे। प्रश्नों और समस्याओं के घेरे में उलझे मानव मात्र को उन्होंने उबारा। सप्रमाण समाधान प्रस्तुत किए। समाधान को नये आयाम दिए। उनके समाधानों में सहजता थी। उनके समाधानों से जन-जीवन में सौहार्द का समावेश हुआ। इससे सारी विकृतियाँ अर्थहीन हो गईं। मनुष्य, मानवता की श्रेष्ठतम अनुकृति से विभूषित हो गया।

⁂ वर्तमान संदर्भ में

आपके सामने एक बात मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि भगवान महावीर की जितनी आवश्यकता आज से ढाई हजार साल पहले थी, उससे कहीं अधिक वर्तमान युग में भी है। भगवान महावीर अष्टकर्मों का क्षय करके सिद्धावस्था प्राप्त कर चुके हैं और जैनदर्शन के अनुसार जो आत्मा कर्मों को निःशेष करके सिद्ध-बुद्ध हो जाता है, उसका इस संसार में पुनः आगमन नहीं होता।

हमारे कई भावुक भक्तजन अपने भाषणों एवं रचनाओं के माध्यम से कई बार एक स्वर समुच्चारित किया करते हैं कि भगवान महावीर आप पुनः कृपा करके इस धरती पर आओ और व्याप्त विषमताओं को दूर करने के लिए अपनी वाणी का अमृत बरसाओ। यह जो अभिव्यक्ति है, भावनाशील मन की अभिव्यक्ति है। भगवान महावीर तो अब इस धरती पर आने से रहे। पर हाँ, निराश एवं हताश होने की आवश्यकता नहीं है। भगवान महावीर न सही पर उनकी जो कल्याणी वाणी है, वह तो आज हमारे समक्ष विद्यमान ही है। हमें उनकी वाणी का तत्परतापूर्वक अनुपालन करना चाहिए।

भगवान महावीर के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों को यदि आज जीवन के व्यवहार में स्थान दिया जाता है तो यह सुनिश्चित है कि सम्पूर्ण संसार का कायाकल्प हो सकता है। उनके सिद्धान्त किसी वर्ग विशेष अथवा काल विशेष में आबद्ध नहीं हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों की उपादेयता सार्वकालिक एवं सार्वभौम है। केवल भगवान महावीर का जयनाद करने मात्र से हमें शांति प्राप्त हो जायेगी यह संभव नहीं। आज हमें भगवान महावीर के जयकार की नहीं, अपितु उनके उपदेशों को जीवन में सत्कार देने की आवश्यकता है। सत्कार का अर्थ जयकार नहीं, अपितु आचरण के रूप में उनके उपदेशों का जीवन-व्यवहार में स्वीकार करना है। मैं कई बार एक बात कहा करता हूँ-

तसवीरी तारों से कभी झंकार नहीं होती ।
मतलबी यारों से कभी मनुहार नहीं होती ।
कितनी ही शोरगुल मचाले इस संसार में
नकली नारों से कभी ललकार नहीं होती ।।

यह कटु सत्य है कि आज महावीर को हमने केवल अपनी प्रतिष्ठा का आधार बना लिया है। हम जैन हैं, जैन कुल में जन्म लिया है इसलिए हम महावीर से जुड़े विशेष प्रसंगों पर उनका चंद घंटों तक एक शोर-शराबे के साथ जयनादों, जुलूसों एवं समारोहों के बीच में स्मरण कर लेते हैं और पुनः उसी स्वार्थी वातावरण में अपने आपको सम्मिलित कर लेते हैं।

कहने को हम भगवान महावीर के भक्त है, पर क्या कभी हम विचार करते हैं कि भक्त का रहन-सहन और जीवन कैसा होता है? महावीर ने क्या कहा और हम क्या कर रहे हैं? यदि गहराई से हमने इस संबंध में विचार किया तो हमें अपनी अपनी भूल का अहसास हुए बिना नहीं रहेगा। छोटी-छोटी अर्थहीन बातों को लेकर हमारे आपसी संघर्ष, एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप, साम्प्रदायिक घेरों की पुष्टि, गुणपरक दृष्टिकोण का अभाव आदि कई ऐसी बातें हैं, जो कतई शोभास्पद नहीं हैं।

हमें महावीर को निकटता से समझने का प्रयत्न करना चाहिए। मेरी दृष्टि में महावीर जन्मकल्याणक का सर्वाधिक ज्वलन्त प्रश्न है, हमारे जीवन में अहिंसा और विचार में अनेकांत का समावेश ये दोनों बिन्दु जीवन की ऊँचाइयों को छूने की दृष्टि से हमें क्षितिज के उस पार तक ले जा सकते हैं, जहाँ आध्यात्मिक ऊँचाई का चरम छुआ जा सकता है।

अहिंसा मूलक चिन्तन हमारा केन्द्रीय लक्ष्य होना चाहिए। मानसिक चिंतन अहिंसा और हिंसा दोनों का केन्द्र बिन्दु है। जैन कथा साहित्य में से एक ही उदाहरण द्वारा हम इस तथ्य को हृदयंगम कर सकते हैं। प्रसन्नचन्द्र राजर्षि मनतः नरक योग्य चिंतन की अंधेरी गुहा तक पहुँच गये थे और मनः चिन्तन के द्वारा ही स्वर्ग तक की यात्रा उन्होंने सम्पन्न कर ली थी। यह सोचने का तरीका है। इसीलिए हमें महावीर ने अनेकांत का अमृत प्रदान किया था। उनका संदेश था कि हम सच को तब तक प्राप्त नहीं कर सकते, जब तक अनेकांत की दृष्टि को नहीं अपनाते। सच ही स्पर्शदीक्षा अनेकांत देता है। अन्य व्यक्ति जो एक विचार लेकर खड़ा है, वह तुम्हें मित्र तभी दिखलाई देगा, जब तुम उसे अनेकांत की आँख से देखना प्रारम्भ करोगे।

तुम्हारे विचारों में जब तक अनेकांत नहीं आएगा, तब तक तुम्हें शत्रु-ही-शत्रु नजर आते रहेंगे। शत्रुओं से घिरा व्यक्ति आध्यात्मिक दृष्टि से भी पराजित होगा और लौकिक दृष्टि से भी । मित्रों के बीच खड़ा व्यक्ति अभय होता है। अभय वही हो सकता है, जिसके सामने कोई शत्रु नहीं हो। जो जग को अनेकांत दृष्टि से देखता है, शत्रु उसके मित्र हो सकते हैं, अनेकांत की आँख ही हमारा दिव्य चक्षु है। यह आँख कभी भी बंद नहीं होनी चाहिए।

❊ जागरण – वेला

भगवान महावीर के जन्मकल्याणक के पावन प्रसंग को मैं जागरण वेला के रूप में देखता हूँ। हम इस पावन प्रसंग को एक दिवसीय उत्सव आयोजन तक ही सीमित न रखें, अपितु इस अवसर पर गहराई के साथ अपने आपका अवलोकन करें एवं कुछ विशिष्टताओं से स्वयं को समृद्ध बनाने का सत्संकल्प अपने भीतर में संजोए। महावीर का मार्ग ही एक ऐसा मार्ग है, जिस पर बढ़ते हुए हम सुख और शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

मुझे एक प्रसंग की बरबस स्मृति हो आई है। प्रवचन में एक बार मैं महावीर के मार्ग पर बढ़ने की बात कह रहा था तो एक भाई मेरे पास आया और बोलने लगा- गुरुदेव ! मैं तो प्रतिदिन महावीर के मार्ग पर ही चलता हूँ। मेरा मार्ग ही महावीर मार्ग है। मैंने कहा- भाई ! बहुत अच्छी बात है कि तुमने महावीर के मार्ग पर अपने आपको गतिशील कर दिया। फिर तो तुम नियमित रूप से सामायिक, स्वाध्याय, सेवा, तप-जप आदि को जीते होंगे? उसने बात को स्पष्ट करते हुए कहा- महाराज ! इन सबके लिए मेरे पास समय नहीं है। बात यह है कि मेरा मकान जिस तरफ है, उस मार्ग का नाम महावीर मार्ग है। दिन हो या रात जब भी कहीं आना-जाना होता है तो मुझे महावीर मार्ग पर ही तो चलना होता है।

उसकी बात को सुनकर मुझे हँसी आए बिना नहीं रह सकी। आप भी उसकी बात को सुनकर हँस रहे हैं, पर वस्तुतः आज ऐसा ही हो रहा है। हमने महापुरुषों के

बताए हुए सिद्धांतों से अपने आपको दूर कर लिया है एवं महापुरुषों के नाम मौहल्ला का, सड़कों का, कॉलोनियों का और घर- प्रतिष्ठानों का नामकरण करके संतुष्टी कर ली है। याद रखिए, इस तरह के दृष्टिकोण से कुछ भी होने-जाने वाला नहीं है। हमें सच्चे अर्थों में महापुरुषों के सिद्धांतों से जुड़ना है, अन्यथा वही बात हो जाएगी-

चीखे, चिल्लाए, उछले-कूदे और खूब टहले ।
हिर-फिर के हम वहीं रहे, जहाँ थे पहले ।।

यदि हम महावीर के पावन सिद्धांतों से स्वयं को संबधित करते हैं तो मैं समझता हूँ कि हमारा जन्मकल्याणक - आयोजन में शरीक होना सार्थक हो सकता है, अन्यथा हर वर्ष की भाँति महावीर जन्मकल्याणक का एक दिन निश्चित है, वह आएगा। समय सरकेगा और हम उन्नयन की दृष्टि से वहीं के वहीं खड़े दिखलाई देंगे। महावीर के सिद्धांतों में अद्‌भुत क्षमता है, यदि इनका उपयोग-प्रयोग किया जाए तो यह निश्चित है कि वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं विश्व की सभी समस्याओं का सुगमता से समाधान हो सकता है। अंत में इन दो पंक्तियों के साथ प्रभु के श्री चरणों में नमन कर अपने वक्तव्य को पूरा कर रहा हूँ-

नई दिशाएँ देने वाले, महावीर की महिमा गाएँ ।
आओ, उनके उपदेशों को, अपने जीवन में अपनाएँ।।

●

भगवान महावीर स्वामीजी २६२३ वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव - २१ एप्रिल २०२४
श्री जैन सामुदायिक उत्सव समिती, पुणे

तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामीजी का २६२३ वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव रविवार दि. २१ एप्रिल २०२४ को आ रहा है ।

निम्नलिखित कार्यक्रम का आयोजन श्री जैन सामुदायिक उत्सव समिती द्वारा आयोजित किया है ।

जैन चारों संप्रदाय की ओर से १९५२ से शोभायात्रा - वरघोडा निकलता है । ये ७१ वाँ साल है।

इस वर्ष रविवार दि. २१/०४/२०२४ के दिन सुबह ७.३० बजे महावीर स्वामीजी का प्रतिमा की भव्य शोभायात्रा वरघोडा निकलेगा ।

प्रारंभ : श्री गोडीजी पार्श्वनाथ जैन मंदिर - बरतन बझार - बोहरी आळी - सोन्या मारुती चौक - गणेश पेठ - गोविंद हलवाई चौक - बुरडी पूल - पालखी विठोबा चौक - शंखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर - रामोशी गेट - टिंबर मार्केट - मनमोहन पार्श्वनाथ मंदिर - सेव्हन लव्हज चौक - अप्सरा टॉकीज - प्रभात प्रेस - कटारीया हायस्कूल - लक्ष्मी विलास - मुकुंदनगर - सुजय गार्डन - शिवशंकर सभागृह रस्ता होकर आदिनाथ स्थानक भवन यहाँपर दोपहर ११.४५ बजे समाप्ती होगी ।

आदिनाथ स्थानक में १२ बजे मांगलीक प्रवचन एवं पारीतोषिक वितरण होगा । दोपहर १२.३० से २ बजे तक स्वामी वात्सल्य एवं गौतमी प्रसादी

❊ अहिंसा रॅली : ३.४५ बजे श्री जैन सामुदायिक उत्सव समिती आयोजित भव्य टू व्हीलर अहिंसा रॅली प्रारंभ - दादावाडी अहिंसा भवन सारसबाग के सामने से विविध मार्ग से जायेगी ।

उस दिन अन्नदान, रक्तदान शिबीर, गायों का चारा, पाणी टँकर वाटप इ. कार्यक्रम जुलूस के बाद में किए जायेंगे ।

❊ सांस्कृतिक कार्यक्रम : सोमवार दि. २२ एप्रिल २०२४ शाम ७ से १० बजे तक जय जिनेंद्र प्रतिष्ठान (नाजुश्री) में विविध गुणदर्शन धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम विविध कलाकार अपनी, प्रसुती करेंगे । नवकार महामंत्र पर आधारीत नृत्य, महिला, युवती द्वारा भव्य दिव्य आकर्षक गरबा नृत्य हजारो दीपों की महाआरती होगी। ●

ज्योति पुरुष महावीर

लेखिका : आचार्य चंदनाजी

भारतीय काल गणना में चैत्र मास का अपना एक वैशिष्टय है। चैत्र को मधुमास कहा जाता है अर्थात माधुर्य का मास। वह कुसुमाकर है, महकते फूलों का खजाना।

चैत्र की विभूतियाँ

चैत्र अष्टमी को आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जन्मकल्याणक है और इसी माह की नवमी मर्यादा पुरूषोत्तम राम के जन्म से गौरवान्वित है और पूर्णिमा महाबली हनुमान के जन्म से संबन्धित है। इसी माह के शुक्लपक्ष के प्रथम दिन से शक्ति पूजा और अन्तिम नौ दिन जैन परम्परा के हजारों हजार भक्त तपस्वी आयंबिल तप की उत्कृष्ट तपश्चर्या की साधना करते हैं।

भारतीय ज्योतिष यों तो हरएक त्रयोदशी को सर्वसिद्धा कहते हैं परन्तु चैत्र की सर्वशुक्ला त्रयोदशी तो वस्तुतः सर्वसिद्धा है। इस त्रयोदशी की शुभ ज्योत्स्ना की अर्धरात्री में एक दिव्य घटना घटित हुई थी, जिसने विश्व इतिहास में ऐसी गरिमा और महिमा प्राप्त की जो आज भी हजारों लाखों नर-नारियों द्वारा स्मरणीय है।

महावीर का जन्म

ईसापूर्व ५९९ का वर्ष विश्व इतिहास में एक आलोक वर्ष कहा जाता है। जंबुद्वीप एशिया खण्ड के उपमहाद्वीप भारत के पूर्वांचल में चैत्रशुक्ल १३ के दिन एक ज्योतिपुरूष ने जन्म लिया था। जिसके दिव्य प्रभामण्डल से मानव जाति के भाग्य क्षितिज पर एक अपूर्व आलोक फैल गया। मानवता उल्लास से पुलक उठी और गगनमण्डल एक अलौकिक चमक से चमक उठा। विश्वभर की - धरा स्नेह सुरभि से महक उठी। मानवता का - अमर प्रकाश महामानव के पावन स्पर्श से विश्व का वायुमण्डल सुरभित हो उठा। कहते - हैं उस दिन धरती और स्वर्ग एक हो गया था। - स्वर्ग के देव विराट आत्मा की वन्दना करने धरती पर उतर आए थे। मालुम है वे कौन थे? भारत के इतिहास ने उन्हें तीर्थंकर महावीर के नाम से जाना है। वे पहले वर्धमान के रूप में थे, बाद में भगवान बन गये। वर्धमान ही महावीर बन सकते हैं। जो हर वक्त वर्धमान रहता है, गतिशील रहता है, जो नित्य निरन्तर आगे की ओर बढ़ता है वही महावीर बनता है। महाकाल के इतने दूर के किनारे ऊपर भी आज श्रद्धा और भावना से स्पन्दित लाखों-करोंड़ों मनुष्यों के हृदय उन्हें तीर्थंकर महावीर के नाम से वन्दन करते हैं।

महावीर गणतन्त्र के राजकुमार

गणतन्त्रों के इतिहास में वैशाली के गणतन्त्र का प्रमुख स्थान है। वह मल्ल, लिच्छवी, वज्जी और ज्ञातृ आदि आठ गणतन्त्रों का एक संयुक्त गणतन्त्र था। उस गणतन्त्र की राजधानी थी वैशाली, जिसके सम्बन्ध में तथागत बुद्ध ने कहा था कि स्वर्ग के देवों को देखना हो तो वैशाली के पुरूषों को देखो और देविओं को देखना हो तो वैशाली की महिलाओं को देखो। इसका अर्थ है कि वैशाली उस युग में स्वर्ग से स्पर्धा कर रही थी। इसी वैशाली के उपनगर क्षत्रियकुल में ज्ञातृशाखा के गणराजा सिद्धार्थ के यहाँ वर्धमान महावीर का जन्म हुआ। उनकी माता थी विदेह की राजकुमारी राणी त्रिशला। त्रिशला वैशाली गणराज्य के महामात्य राष्ट्राधीश चेटक की छोटी बहन थी। दिगम्बर जैन पुराण उन्हें चेटक की पुत्री कहते हैं। भारत का पूर्वखण्ड उन दिनों शासनतन्त्र की प्रयोगभूमि बना हुआ था। एक ओर मल्ल, लिच्छवी और शाक्य आदि गणतन्त्र फल-फूल रहे थे और दूसरी ओर मगध, वत्स आदि राजतन्त्र भी यशस्विता के शिखर पर पहुँच रही थी। महावीर का संम्बन्ध दोनों तन्त्रों से था। महावीर मूल में गणतन्त्र के

राजकुमार थे परन्तु उनका पारिवारिक सम्बन्ध भारत के उस समय के अनेक एकतन्त्री उच्च राजवंशियों के साथ भी था। मगध सम्राट श्रेणिक, अवन्तिपति चन्द्रप्रद्योत, कौशाम्बी नरेश शतानिक और सिन्धु सौविर देश के राजा उदाई (उदायन) जैसे एकतन्त्री नरेश उनके निकट के सम्बन्धों में से थे।

साधना के पंथ पर

महावीर को वह सब प्राप्त था जो एक राजकुमार को प्राप्त होता है। यद्यपि वे गणतन्त्र के राजकुमार थे, पुराणों में प्राचीन गणतन्त्रों के प्रमुखों की श्रीसमृद्धि का वर्णन भी राजतन्त्रों की तरह ही मिलता है। अतः महावीर वैभव, विलास, सुख-साधनों की दृष्टि से एकतन्त्र राजकुमारों से किचिन्मात्र न्यून नहीं थे। लेकिन महावीर का जागृत मन वैभव की मोहक लीला में अधिक न रम सका। यौवन के आल्हादक मधुर क्षणों में ही त्यागी बन गये। तीस वर्ष के यौवनकाल में जब कि मनुष्य की आँखें कम ही खुलती है तब महावीर ने आँखें खोली। उनके अन्दर की ज्ञानचेतना जगी और वे चल पड़े अकेले ही निर्जन शून्य वनों की ओर, साधना के कठिन पथ पर । प्रजा और परिवार का निर्मल प्रेम अपार मान सम्मान, भोगविलास के विशाल सुखसाधन और राज्यश्री का मोहक रूप महावीर को यह सब सहज प्राप्त था, परन्तु महावीर जलकमलवत् निर्लिप्त और निस्पृह थे। मार्गशीर्ष दशमी के दिन समग्र सांसारिक सम्बन्धों से मुक्त होकर सर्वथा अकिंचन श्रमण हो गये।

वे श्रमण जीवन की एकान्त आत्मसाधना में लीन हो गये। जहाँ चारों ओर मौत नाच रही हो वहाँ हिंसक प्राणियों से व्याप्त शून्य वनों में, पर्वतों की गहरी अंधेरी गुफाओं में, नदियों के तट पर प्रभु महावीर ध्यानस्थ खड़े रहते। तन मन दोनों से मौन अचल अकेले अद्वितीय। महावीर का संयम बाहर से आरोपित नहीं था। वे अन्दर से जागृत थे। इसलिए प्राणान्तक कष्टों का भयंकर खतरा भी उन्हें अपने पथ से विचलित न कर सका। अनुकूल और प्रतिकूल दोनों स्थितियों में वे निष्प्रकम्प दीपशिखा की तरह आत्मलीन रहे। सब ओर से विस्मृत एकमात्र सत्य जिसे प्राप्त करने के बाद दूसरा कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रहता। वह सत्य श्रुतसत्य नहीं था या कभी गुरू से या किसी ग्रन्थ से प्राप्त नहीं होता उस सत्य की खोज, उस सत्य की प्रत्यक्ष अनुभूति के लिए दीर्घ सुदीर्घ काल तक साड़े बारह वर्ष तक तपः साधना में लीन रहे। इस प्रत्यक्ष सत्य को स्वयं की अनुभूति द्वारा अन्दर की जागृति से पाया जाता है। जिसे दर्शन की भाषा में केवलज्ञान, सत्य का निराबाध बोध कहा जाता है उसे प्राप्त किया।

लोकमंगल के लिए धर्मदेशना

केवलज्ञान प्राप्त होने के बाद प्रभु महावीर उनका साक्षात्कृत सत्य बोध जन-जन को देने के लिए एकान्त निर्जन वनों से जनता के बीच आये। स्वयं कृतकृत्य होकर लोकमंगल हेतु महावीर ने धर्म देशना की। जो कुछ प्राप्त करना था वह प्राप्त हो गया था। वैयक्तिक प्राप्ति या सिद्धि जैसा कुछ भी शेष नहीं था। तब धर्मदेशना का क्या उद्देश्य था? गणधर सुधर्मा के शिष्य आर्यजम्बु ने प्रभु महावीर की धर्म देशना का हेतु बताया है- सव्व जग जीव रक्खण दयठ्ठयाए भगवया पावयणं सुकहियं। इससे फलित होता है कि महावीर एकान्त निवृत्तिवादी नहीं किन्तु प्रवृत्तिवादी भी थे। उनकी जीवन धारा निवृत्ति और प्रवृत्ति के दोनों तटों के बीच से बहती थी। महावीर की प्रवृत्ति जनजागरण, जनमंगल की थी। अंधकार में भटकती मानवजाति को शुद्ध सत्य की ज्योति के दर्शन कराना ही प्रवचन का उद्देश्य था।

महावीर का धर्म

महावीर शरीर नहीं आत्मा है। अतः उनका धर्म भी शरीराश्रित नहीं, आत्माश्रित है। अनेक विकारों की पर्तों के नीचे दबे अपने शुद्ध और परम चैतन्य की शोध ही महावीर की धर्म साधना है। महावीर का धर्म जीवन विकास की एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। अतः वह एक शुद्धधर्म है। धर्म एक ही होता है अनेक नहीं। अनेकत्व क्रियाकाण्ड पर आधारित होता है। जबकि

क्रियाकाण्ड देश, काल और व्यक्ति की बदलती परिस्थिति से सम्बन्ध रखते हैं। फलतः वे अशाश्वत होते हैं जबकि धर्म एक शाश्वत सत्य है।

धर्म और क्रियाकाण्ड की भिन्नता को समझने के लिए जैनदर्शन के निश्चय और व्यवहार नय को समझना होगा। निश्चय आन्तरिक चेतनाश्रित एक शुद्धभाव है। अतः वह सदा सर्वदा एक ही होता है। व्यवहार देहाश्रित होता है, बाह्याश्रित होता है। अत: वह कभी भी एक नहीं हो सकता। इसलिए महावीर शुद्ध और शुभ की बात करते हैं। शुद्ध में भवबन्धन से मुक्ति है और शुभ में बन्धन से मुक्ति नहीं किन्तु बन्धन में परिवर्तन है। अशुभ में से शुभ में बदलना। इस प्रकार महावीर कुछ सीमा तक क्रियाकाण्ड रूप शुभ की स्थापना करते हैं और वहाँ से ऊपर उठने की बात कहते हैं। महावीर न स्थविरकल्पी है न जिनकल्पी। वे जैन दर्शन की भाषा में कल्पातीत है। अर्थात साम्प्रदायिक पंथों के सारे क्रियाकाण्डों से मुक्त सहज शुद्ध स्वभाव में स्थित।

महावीर का पुरूषार्थवाद

महावीर ने मानवजाति को पुरूषार्थ प्रधान कर्मदृष्टि दी है। उनका कर्मवाद भाग्यवाद नहीं किन्तु भाग्य का निर्माता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य ईश्वर के हाथ की- कठपुतली नहीं है कि वह जैसा चाहे मनुष्य को नचाये। वह अपने भाग्य का स्वयं स्वतन्त्र विधाता है। उसका अच्छा या बुरा निर्माण उसके अपने हाथ में है। महावीर का कर्म सिद्धान्त मनुष्य को अंधकार में से प्रकाश में लाता है, कदाचार में से सदाचार में लाता है और हरवक्त गतिशील होने की प्रेरणा देता है।

महावीर का सत्य, अनन्त है

महावीर कहते हैं- 'सत्य अनन्त है।' वह कोई एक व्यक्ति, जाति, राष्ट्र, पंथ या सम्प्रदाय विशेष में आवद्ध नहीं है। जो अनन्त है उसे शब्दों की क्षुद्र परिधि में कैसे समावेश किया जा सकता है? आकाश अनन्त है। वह घटाकाश के रूप में प्रतिभाषित एवं प्रचारित होने पर भी आकाश घट में सीमित नहीं है। यही बात सत्य के सम्बन्ध में भी है। वह तत्त्वदर्शी महापुरूषों की चेतना में झलकता तो पूर्ण है परन्तु वाणी में उसका कुछ अंश ही आ सकता है। सम्पूर्ण रूप से सत्य किसी एक व्यक्ति के द्वारा कभी व्यक्त नहीं हो सकता। जब भी प्रकट होगा, अंशतः ही प्रकट होगा। महावीर के अनेकान्त का बीज इस तत्त्वदृष्टि में है। महावीर का तत्त्वदर्शन समन्वय का तत्त्वदर्शन है। जो विभिन्न विचारों को एक धारा का रूप देता है।

महावीर की अहिंसा मैत्री है

महावीर ने अहिंसा की परिधि को खूब विस्तार दिया। उनकी अहिंसा अमुक प्राणीविशेष तक नहीं किन्तु प्राणीमात्र के प्रति प्रवाहित हुई। महावीर की अहिंसा ने समाज, राष्ट्र, धर्म, पंथ और व्यक्ति के अपने पराये सभी भेदों को तोड़ा, सर्वत्र समदर्शन का अद्वैती शंख बज उठा। तू और मैं एक, तेरा और मेरा सब एक। यह है महावीर की अहिंसा का मार्ग।

महावीर की दृष्टि में किसी प्राणी की हत्या ही केवल हिंसा नहीं है किन्तु उन्होंने प्रत्येक शोषण, उत्पीड़न एकान्त आग्रह को भी हिंसा कहा है। केवल तन की हिंसा ही हिंसा नहीं बल्कि तन की हिंसा से भी मन की हिंसा भयंकर होती है।

महावीर की अहिंसा केवल करूणा पर आधारित नहीं है। महावीर अहिंसा का साक्षात्कार मैत्री में करते हैं। उनकी दृष्टि में मैत्री ही शुद्ध अहिंसा है। करूणा की अहिंसा कभी सामनेवाले को बिचारा बना देती है- जैसे "**अरे बिचारा मर रहा है उसे बचाना चाहिए।**" करूणा में रक्षा पानेवाला नीचे और रक्षा करनेवाला ऊपर होता है। परन्तु मैत्री में सब एक धरातल पर होते हैं। कोई ऊँचा-नीचा नहीं होता बल्कि सब बराबर होते हैं। इसलिए महावीर ने कहा "**विश्व के प्राणियों के साथ किसी भी प्रकार के पक्ष-विपक्ष रहित मैत्री करो।**" "**मेत्ति भूएसु कप्पए**" आज विश्वमानव को मैत्रीपूर्ण अहिंसा की जरूरत है।

महावीर की ऐतिहासिक उपलब्धि

भगवान महावीर की सामाजिक सन्दर्भ में जो एक ऐतिहासिक और सर्वोत्तम उपलब्धि है वह है मानव को मानव के रूप में प्रतिष्ठित करने की दृष्टि। महावीर के दर्शन में मानव ही महान है। मानव देवपूजक नहीं किन्तु देव ही मानव पूजक है। **''देवावि तं नमंसन्ति जस्स धम्मे सया मणो''** जिनका अन्तर्मन धर्म में रमा हुआ है उनके चरणों में देव भी नतमस्तक हो जाते हैं। देवों की दासता से मुक्त करनेवाले वे ही महामानव है जिन्हें भारत के प्राचीन मनीषियों ने देवाधिदेव कहा है। देवाधिदेव का अर्थ है देवों के भी देव ।

जब मनुष्य बाहर की मान्यताओं के आवरणों में दब गया था, पशुओं को तो एक खूँटें से बाँधा जाता है परन्तु मानव तो हजार-हजार खूँटों से बँधा हुआ था, तब महावीर ने धर्म, संप्रदाय, जाति, वर्ण, वर्ग, लिंग, समाज और राष्ट्र आदि कृत्रिम कल्पित आवरणों को एवं बन्धनों को तोड़कर मानव को मानव की स्वतन्त्र शुद्ध महत्ता में स्थापित किया।

महावीर ने स्त्री और पुरूष, आर्य और अनार्य, ब्राह्मण और क्षुद्र आदि कृत्रिम भेद रेखाओं को हटाकर धर्म को प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुलभ बनाया। सारे भेदभाव मिटाकर धर्म को सर्वजनहिताय सर्वजन सुखाय तथा सर्वजन समाचरणाय प्रस्तुत किया। मानवता के इतिहास में महाश्रमण महावीर की ऐसी अपूर्व उपलब्धि है कि जिसे आज की भाषा में नयी विचार क्रान्ति कहा जा सकता है।

महावीर का शाश्वत संदेश

महावीर का दिव्य संदेश किसी सम्प्रदाय या जाति विशेष के लिए नहीं किन्तु समग्र मानवजाति के लिए है। उनका दिव्य बोध किसी समय विशिष्ट के लिए सामयिक नहीं किन्तु शाश्वत है। जिसे देश और काल की क्षुद्र सीमा बांध नहीं सकती। महावीर समग्र मानवता के लिए एक दिव्यातिदिव्य प्रकाश - स्तम्भ है। उनके सिद्धान्तों और आदर्शों के - निर्मल प्रकाश में हर कोई व्यक्ति हर किसी - देश और काल में आत्मबोध का संदेश प्राप्त करता रहेगा। और जीवन के परम लक्ष्य की - ओर आनन्द के साथ अग्रसर होता रहेगा।

जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देव देव महियं सिरसा वन्दे महावीरम् ।। ●

भगवान महावीर जन्म कल्याणक निमित्त

''महावीर गाथा''

प्रवचनकार : उपाध्याय प्रवर प.पु. प्रविणऋषिजी म.सा. आदि ठाणा

दिनांक १४ एप्रिल ते २१ एप्रिल २०२४ – रात्री ८ ते १०

स्थान : गोयल गार्डन, आशापुरा मंदिर शेजारी, गंगाधाम ते कोंढवा रोड, पुणे.

आयोजक : श्री श्वेतांबर स्थानकवासी जैन सकल संघ, पुणे जिल्हा.

संपर्क : ९४२२०२४५००, ९३७२०३९७२८

महावीर प्रभु : अंग्रेजी नामाक्षर के सप्त सन्देश

लेखिका : महासती श्री. विमलकुमारीजी म. सा.

म – मनमोहन प्रभु का नाम है, शांति का कारण सदा ।

हा – हार्दिक भाव से वन्दन कर, करती हूँ मैं स्मरण सदा ।

वी – वीतराग जिनदेव विभू, भवसिन्धु तारण-तिरण सदा ।

र – रमण करे तुम नाम हृदय नित, मिथ्या कुमति तम हरण सदा।

प्र – प्रणमत इन्द्रसुरासुर, अर्चित है तुम चरण सदा ।

भु– भूति प्रज्ञ सर्वज्ञ विमल, तुम चरण-शरण नमूं सदा ।

महावीर कल्याणक हर वर्ष मनाते हैं,
खुश होकर के उनके गीत गाते हैं,
लेकिन मैं पूछती हूँ आपसे,
कि हम अपनी कितनी बुराइयाँ दफनाते हैं।

अंग्रेजी में महावीर को **MAHAVIR** लिखते हैं। प्रभु महावीर ने दुनियाँ के लिए सात संदेश भेजे हैं । जो इस प्रकार हैं –

पहला अक्षर है – **"M" Make Your Heart Mercyful.** अर्थात् आप अपना हृदय दयालु बनाओ। दयालु हृदय नंदनवन के समान है। समाज को संगठित रखने के लिए दया एक स्वर्ण जंजीर है। Kindness is the Yourden Chain by which society is Vound Foseher. अर्थात दयालु हृदय एक राजमुकुट से भी मूल्यवान है। महात्मा गांधी ने भी भी कहा है – जिनके जीवन में दया नहीं, विनय नहीं, त्याग की भावना नहीं, परोपकार की वृत्ति नहीं, संयम नहीं, ब्रह्मचर्य नहीं – वे करोड़पति होते हुए भी दरिद्र हैं।

दूसरा अक्षर है – **"A" Abandonment Must be our Motto.** अर्थात त्याग। यही जीवन का सिद्धान्त होना चाहिए । त्याग के बिना ज्ञान की कोई कीमत नहीं, त्याग जीवन-शुद्धि का राज मार्ग है, मुक्ति के अभिलाषी पथिक को उसके अभिष्ट लक्ष्य पर पहुँचा देता है और प्रचंड तृष्णा के भयंकर तूफान से डगमगाने वाली मन रूपी नौका को सिर्फ त्याग रूपी नाविक ही लक्ष्य तक पहुँचा सकता है ।

तीसरा अक्षर है – **"H" Humanity is the Root of all Virtues.** नम्रता सब सद्गुण का मूल है, जगत को आज नम्रता की जरूरत है । नम्रता से मानव की कीर्ति बढ़ती है। मान-सम्मान और आदर बढ़ता है। गुजराती में कहावत है, ''नमे ते गमे'' कुएँ में से पानी निकालना हो तो पानी में रहे हुए घड़े को तथा निकालने वाली बहन को नमना ही पड़ता हैं। तब कहीं जाकर पानी निकलता है, बहनें तरकारी लेने मार्केट में जाती है। तराजू का काँटा झुका हुआ होगा तो बहनों को संतोष होगा। उसी तरह हृदय मैं दया, प्रेम, अनुकम्पा और आस्था रखो ।

चौथा अक्षर है – **"A" Anger is the Madness of Mind.** क्रोध एक मन का पागलपन है, क्रोध में मानव बेभान हो जाता है, क्रोध को तिलांजली दे देना चाहिए । ''उवसमेण हणे कोहं'' क्रोध को क्षमा से जीतो । क्षमावान बनना है, स्कंधक जैसा । जिन्होंने अपने शरीर की चमड़ी उतारने वालों को भी सिद्धपद-प्राप्ति का साधन समझा ।

पाँचवा अक्षर है– **"V" Virtue Makes a man Happy and Great.** सद्गुण मानव को महान् और सुखी बनाता है। गुलदस्ते को सजाने के लिए अनेक प्रकार के फूल उसमें रखने होते हैं, तभी वह मनभावन होता है। ठीक उसी प्रकार हमारा जीवन भी सर्व गुणों से युक्त हो । सरलता, सहिष्णुता, समता,

धैर्यता आदि। जैसे प्रभु वीर का जीवन-सुन्दर महकते उपवन के समान सद्गुणों की सुवास से सुरभित है ।

छठा अक्षर है - **"I" Idleness is the Root of all Sins.** प्रमाद पाप का मूल है। जीवन में यदि सफलता के शिखर पर चढ़ना है, कामयाबी का ध्वज लहराना है तो आलस्य हटाना ही होगा । प्रमाद मृत्यु है अप्रमाद जीवन है, आलस्य को त्यागने वाला ही आत्मा के कर्म रूपी आवरणों को दूर कर सकता है। प्रमाद को छोड़ने वाला परम पद को प्राप्त करता है । प्रभु महावीर का जीवन अप्रमत्तता की मिसाल था । उन्होंने अपने दीर्घ साधना काल में मात्र ४८ मिनट ही नींद ली । यह है - जागृत अवस्था। कहा भी है जो सोवत है, सो खोवत है । जो जागत है, सो पावत है ।

सातवाँ अक्षर है - **"R" Rightness must be Root of all Life.** सच्चाई हमारे जीवन का मूल है। ''सत्यमेव जयते नानृतम्।'' - यह भारतीय संस्कृति का उद्घोष है और यही जैन दर्शन का उद्घोष है। कि ''सच्चं खु भगवं ।'' सत्य ही भगवान है। झूठ के पैर नहीं होते, यह सर्व विदित है। सत्य के आधार पर ही श्रमण और श्रावकों के व्रत-महाव्रत है । सत्य बोलने वाला कभी भयभीत नहीं होता ।

MAHAVIR शब्द के सात अक्षरों में से प्रथम अक्षर में 'दया' तथा 'अहिंसा' समाहित है, जो प्रभु का सर्वमान्य प्रथम सिद्धान्त है तथा अन्त के अक्षर में सत्य आया है, जो हर वर्ग के लिए आवश्यक है। जिसे हम 'अनेकान्त' कह सकते हैं, वचनों की विसंवादिता नहीं होनी चाहिए। Trust is god. के मध्य में पाँच गुण जो हैं, वे मोतियों के समान है।

हम प्रयास करें कि महावीर स्वामी के मात्र गुणगान की अपेक्षा उनके नाम में रहे हुए गुणों को आचरण में लाये । चैत्र शुक्ल त्रयोदशी महावीर जन्म कल्याणक के अवसर पर हम भी शक्ति पुँज बनें । तप की ज्वाला में तपकर कुंदन बने, ज्योतिष्मान नक्षत्र की भाँति अन्दर-बाहर को प्रकाश से भर दें । प्राणियों को अभयदान देकर सर्जक बनें एवं संसार में रहकर भी कर्तव्य पालन करते हुए संसार से निर्लिप्त रहें, तभी हमारा महावीरत्व जगेगा ।

म – मन को कर ले वश में, पाँचों इन्द्रियाँ दास रहे ।
हा – हाय न लेवे किसी की, दुःखीजनों के पास रहे।
वी – वीणा सरगम जैसी, मधुवाणी बरसाता चल -
र – रहना साधु संगत में, मधुर-प्रेम विश्वास रहे। ●

सौ. सुनंदा चोरडिया, जैन जागृति –सन्मान

स्वानंद महिला संस्था व जैन कॉन्फरन्स महिला शाखा द्वारा अखिल भारतीय पंधरावे स्त्री साहित्य कला संमेलन १६ मार्च २०२४ रोजी ग. दि. माडगूळकर नाट्य गृह, आकुर्डी येथे संपन्न झाले.

जैन जागृतिच्या संपादिका सौ. सुनंदा संजयजी चोरडिया यांना ''स्वानंद भरारी सृजनशील संपादकीय सेवा पुरस्कार'' मराठी साहित्य संमेलनाचे मा. अध्यक्ष डॉ. श्रीपालजी सबनीस व संमेलनाचे अध्यक्ष ज्येष्ठ साहित्यीका नीलमजी माणगावे, श्री. रमणलालजी लंकड, श्री. सुनीलजी बाफना व प्रा. सुरेखाजी कटारिया इ. मान्यवरांच्या हस्ते देऊन सन्मानित करण्यात आले.

जैन जागृति मासिक १९६९ पासून गत ५५ वर्ष जैन धर्म प्रभावना सातत्याने करत आहेत. सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या जैन जागृति मासिकाच्या कार्याबद्दल अनेक संस्थेकडून सन्मानित करण्यात आले आहे. ●

कव्हर तपशील - २०२४

❖ **श्री क्षत्रियकुंड तीर्थ**

भगवान महावीर स्वामी यांची च्यवन, जन्म व दीक्षा कल्याणक भूमी श्री क्षत्रियकुंड तीर्थ. (लेख पान नं. ४३)

❖ **श्री सुभाषजी रुणवाल, मुंबई – ॲवार्ड**

मुंबई येथील सुप्रसिध्द बिल्डर, उद्योजक व दानवीर श्री. सुभाषजी रुणवाल व सौ. चंदाजी रुणवाल यांना रियल इस्टेट उद्योगातील योगदाना बद्दल लोकमत रियल इस्टेट कॉन्क्लीव्ह मध्ये ''लाईफ टाईम ॲचिव्हेमेंट ॲवार्ड'' देण्यात आला. (बातमी पान नं. १५५)

❖ **अरिहंत जागृती मंच**

पुणे येथील अरिहंत जागृती मंच तर्फे जैन धर्म प्राचीन स्वतंत्र धर्म व जैन सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य एक शोध या दोन पुस्तकाचे प्रकाशन करण्यात आले. (बातमी पान नं. १६५)

❖ **गौतम लब्धि फाऊंडेशन सेंट्रल महिला विंग**

पुणे येथील गौतम लब्धि फाऊंडेशन सेंट्रल महिला विंग तर्फे ८ मार्च रोजी नारी शक्तीचा सन्मान समारोह महावीर प्रतिष्ठान येथे आयोजित केला. यावेळी पत्रकार मिलन म्हेत्रे, पायलट शिल्पाजी सोलंकी व सोशल वर्कर पौर्णिमा गदिया यांचा सन्मान करण्यात आला. (बातमी पान नं. १६७)

❖ **स्वानंद महिला संस्था व जैन कॉन्फरन्स**

स्वानंद महिला संस्था व ऑल इंडिया जैन कॉन्फरन्स संयुक्त विद्यमाने अखिल भारतीय स्त्री साहित्य – कला सम्मेलन १६ मार्च रोजी आकुर्डी येथे भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाले. (बातमी पान नं. १५८).

❖ **सौ. सुनंदा चोरडिया, जैन जागृति – सन्मान**

जैन जागृति मासिकाच्या संपादिका सौ. सुनंदा चोरडिया यांना स्वानंद महिला संस्था व जैन कॉन्फरन्स यांनी आयोजित केलेला स्त्री साहित्य व कला सम्मेलनात स्वानंद भरारी, सृजनशील संपादकीय सेवा पुरस्कार देऊन सन्मानीत करण्यात आले.(बातमी पान नं. १३२)

❖ **जैन समाज गौरव – श्री. वालचंदजी संचेती**

शैक्षणिक व सामाजिक क्षेत्रातील उत्तुंग व्यक्तिमत्त्व श्री. वालचंदजी संचेती यांचा लेख प्रसिध्द केला आहे. (लेख पान नं. ९१)

❖ **निर्मला चंद्रकांतजी छाजेड, पुणे**

बोपोडी, पुणे येथील श्रीमती निर्मला चंद्रकांतजी छाजेड यांची मानव मिलन महिला विभाग, पुणे या ग्रुपवर अध्यक्ष म्हणून निवड झाली आहे. (बातमी पान नं. १६९)

❖ **संचेती ट्रस्ट, पुणे**

पुणे येथील स्व. इंदूमती बन्सीलालजी संचेती ट्रस्टच्या वतीने महिला दिना निमित्त गरजू कामगार महिलांना साडी वाटप व पाणपोईचे उद्घाटन करण्यात आले. (बातमी पान नं. १४४) ●

जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वांत खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत रिजनेबल मार्ग...

जैन जागृति